श्रीअरविन्द के प्रकाश में मायावाद के तार्किक निहितार्थों का आलोचनात्मक अध्ययन

संगीता शुक्ला

भारतीय दर्शन में माया की अवधारणा दार्शनिकों के लिए विशेष रूप से उल्लेखनीय रही है, क्योंकि भारतीय दार्शनिकों ने माया को ही आधार बनाकर यथार्थ सत्ता एवं सम्यक् जगत् का निरूपण किया है। श्रीअरविन्द के दर्शन में भी माया की अवधारणा का अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान है। इसका इतना महत्व है कि माया को समझे बिना इनके तत्व दर्शन को नहीं समझा जा सकता है। श्रीअरविन्द दर्शन में माया केन्द्रीय सिद्धान्त है तथा उनका समग्र अद्वैतवाद उनकी मायावादी अवधारणा पर ही टिका है।

माया संस्कष्त का एक सारगर्भित शब्द है। विश्व की किसी दूसरी भाषा में इसका पर्याय नहीं है। यदि शाब्दिक अर्थ या शब्द की व्युत्पत्यात्मक दृष्टि से देखें तो माया शब्द दो अक्षरों से बना है 'मा' और 'या;। 'मा' का अर्थ 'नहीं' तथा 'या' का अर्थ 'जो' होता है। इस प्रकार 'जो नहीं है' वह माया है। इस दृष्टि से माया एक अभावात्मक और निषेधात्मक प्रत्यय है।